जुमे का दिन

49

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

जुमे के दिन की अहमियत

यूं तो सब दिन अल्लाह तआला के बनाए हुए हैं। मगर जुमे के दिन की अहमियत को बयान करते हुए अल्लाह के रसूल सल्लललाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ''अल्लाह तआला ने हम से पहले के लोगों को जुमे से मेहरूम रखा। चुनांचे यहूदियों के लिए सनीचर और ईसाईयों के लिए इतवार का दिन था। फिर अल्लाह हमें ले आया और उसने हमारी जुमे के दिन की तरफ़ रहनुमाई की। उसने (दिनों की तरतीब इस तरह बनाई कि) पहले जुमा, फिर सनीचर और उसके बाद इतवार। इसी तरह वह क़यामत के दिन भी हमसे पीछे होंगे। हम दुनिया में आए तो आख़िर में हैं लेकिन क़यामत के रोज़ हम पहले होंगे और तमाम उम्मतों में सबसे पहले हमारा फैसला किया जाएगा।'' (मुस्लिम–856)

''सबसे बेहतर दिन जिसका सूरज तुलूअ हुआ, जुमे का दिन है। इसमें आदम अलैहि. को पैदा किया गया। इसी में उन्हें ज़मीन पर उतारा गया। इसी दिन उनकी तौबा कुबूल की गई। इसी दिन उनकी वफ़ात हुई और इसी दिन क़यामत क़ायम होगी। हर जानदार जुमे के दिन सुबह से लेकर सूरज निकलने तक क़यामत से डरते हुए उसके इन्तेज़ार में रहता है सिवाए जिन्न व इन्स के और जुमे के दिन एक वक़्त ऐसा भी आता है कि ठीक उसी वक़्त में जो बन्दा ए मुस्लिम नमाज़ पढ़ रहा हो और वह अल्लाह से जिस चीज़ का सवाल करे तो अल्लाह उसे वह चीज़ अता करता है। (अबुदाऊद–1046–सही)

''तुम्हारे दिनों में सबसे अफ़ज़ल जुमे का दिन है। इसी में आदम अलैहि. को पैदा किया गया इसी में उन पर मौत आई। इसी में सूर फूंका आएगा और इसी में ज़ोरदार चीख़ की आवाज़ आएगी।'' (अबुदाऊद–1046–सही) ''बेशक!यह ईद का दिन है। जिसे अल्लाह ने सिर्फ़ मुसलमानों के लिए (ईद का दिन) बनाया है। लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़े जुमा के लिए आए तो वह गुसल करे, खुश्बु हो तो ज़रूर लगाएं और तुम पर मिस्वाक करना लाज़िम है।'' (इब्ने माजा–1098–सही)

''बेशक! जुमे का दिन तमाम दिनों का सरदार है और अल्लाह के

नज़दीक सबसे ज़्यादा अज़मत वाला है। यह दिन अल्लाह के यहां ईदुल फ़ितर और ईदुलजुहां से भी ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। इस दिन की पांच खुसूसियात है।

1. अल्लाह तआला ने इसी दिन आदम अलैहि. को पैदा किया।

2. इसी दिन उन्हें जमीन की तरफ़ उतारा।

3. इसी दिन उनकी वफ़ात हुई।

4. इसमें एक घड़ी ऐसी है कि उसमें बन्दा अल्लाह से जिस चीज़ का सवाल करता है, अल्लाह उसे वह अता करता है बशर्ते कि वह हराम का सवाल न करें।

5. इसी दिन क़यामत क़ायम होगी और मुक़र्रिब फ़रिश्ते, आसमान, ज़मीन, हवाएं, पहाड़ और समन्दर सब के सब जुमे के दिन से डरते है।'' (इब्ने माजा–1084–सही)

नमाज़े जुमा

जुमे के दिन सबसे अहम इबादत नमाजे़ जुमा है। यह हर मुकल्लिफ़ पर फ़र्ज़ है। इस बारे में इर्शादे बारी तआला है– ''ऐ ईमान वालों! जुमे के दिन जब नमाजे़ जुमा के लिए अज़ान कही जाए तो ज़िक्रे इलाही (नमाज़) की तरफ़ दौड़कर आओ और खरीद व फ़रोख़्त छोड़ दो। अगर तुम जानो तो यही तुम्हारे लिए बेहतर है।'' (जुमा–आयत–9) और अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''नमाजे़ जुमा अदा करना हर मुकल्लिफ़ मुसलमान पर हक़ व वाजि़ब है। सिवाए चार अफ़राद के 1. गुलाम 2. औरत 3. बच्चा और 4. मरीज।'' (अबुदाऊद–1067–सही) इसी तरह मुसाफ़िर पर भी जुमा फ़र्ज़ नहीं हे और इस पर उम्मत का इज्माअ है। नमाजे़ जुमा बा जमाअत अदा करना फ़र्ज़ है। इसे अकेला पढ़ना सही नहीं और जिस शख़्स की नमाजे़ जुमा फ़ौत हो जाए, वह जुहर की चार रकअत अदा करे। नमाजे़ जुमा बग़ैर किसी शरई उज़्र के नहीं छोड़ना चाहिये। इसलिए कि ''जो आदमी ग़फ़लत की वजह से तीन जुमे छोड़ दें, अल्लाह उसके दिल पर मुहर लगा देता है। '' (अबुदाऊद–1052–सही) और यह कि ''लोग नमाजे़ जुमा छोड़ने से बाज़ आ जाएं। वरना अल्लाह तआला उनके दिलों पर मुहर लगा देगा। फिर वह ग़ाफ़िलों में हो जाएंगे।'' (मुस्लिम–865)

आप सल्ल. ने यह भी फ़रमाया कि ''मेरा दिल चाहता है कि मैं एक आदमी को हुक्म दूँ कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए। फिर मैं उन लोगों को उनके घरों समेत आग लगा दूं जो नमाजे जुमा से पीछे रहतें है। (मुस्लिम–852)

आदाबे जुमा

1. गुस्ले जुमा– यह गुसल अल्लाह के रसूल सल्ल. ने हर बालिग़ पर वाजि़ब क़रार दिया है। लिहाज़ा इस दिन गुसल, सफ़ाई, खुश्बू और अच्छे लिबास का

एहतेमाम करना चाहिये। अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''तुम में से कोई शख़्स जब जुमे के लिए आने का इरादा करे तो वह गुसल कर लें।(बुख़ारी–877, मुस्लिम–844) '' जुमे के दिन का गुसल हर बालिग़ पर वाजि़ब है। (बुख़ारी–879,मुस्लिम–846)

2. खुश्बू लगाना (3.) गर्दनें न फलांगना

'' जो आदमी जुमे के दिन गुसल करें। अपनी ताक़त भर पूरी तहारत करें तेल लगाए या अपने घर वालों की खुश्बू लगाए। फिर (मस्जिद में पहुंच कर) दो आदमियों को अलग–अलग न करे (यानि जहां जगह पाए वहीं बैठ जाए) फिर वह नमाज़ अदा करे जितनी उसके (मुक़द्दर में) लिखी गई है। फिर जब इमाम खुत्बा दे तो वह ख़ामोशी से सुने तो दूसरे जुमे तक उसके गुनाह माफ़ कर दिये जाते है।'' (बुखारी–883)

''जो शख़्स गुसल करें, फिर जुमे की नमाज़ के लिए आए और नमाज़ (नफ़िल) अदा करें जितनी उसके लिए मुक़द्दर की गई है। फिर वह ख़तीब का खुत्बा ख़ामौशी से सुनता रहे। फिर उसके साथ नमाजे़ जुमा अदा करे तो दूसरे जुमे तक उसके गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं और मज़ीद तीन दिन के भी।'' (मुस्लिम–857) और यह कि ''जिस शख़्स ने जुमें के दिन गुसल कराया और खुद गुसल किया। नमाज़ के लिए अव्वल वक़्त में आया और जुमे का खुत्बा शुरू से सुना। चलकर आया, सवार नहीं हुआ। इमाम के क़रीब बैठकर खुत्बा सुना और कोई फालतू (लग़ू) हरकत नहीं की तो उसे हर क़दम पर एक साल के रोज़ों और एक साल के क़याम सवाब मिलेगा। (अबुदाऊद–345, इब्ने माजा–1087–सही)

जुमे के लिए जल्दी आने की फ़ज़ीलत

''जिस शख़्स ने जुमे के दिन गुसले जिनाबत की तरह गुसल किया फिर वह जुमे की नमाज़ के लिए मस्जिद में चला गया तो उसने गोया एक ऊंट की कुर्बानी की। जो शख़्स दूसरी घड़ी में मस्जिद पंहुचा गोया उसने गाय की कुर्बानी की और जो तीसरी घड़ी में पहुंचा, उसने गोया सींगोवाले एक मैंढ़े की कुर्बानी की। जो चौथी घड़ी में मस्जिद गया गोया उसने एक मुर्गी की कुर्बानी की और जो पांचवी घड़ी में गया गोया उसके एक अन्डे की कुर्बानी की। फिर जब इमाम मिम्बर की तरफ़ चल निकले तो फरिश्ते (मस्जिद में) हाजि़र हो कर जि़क्र (खुत्बा) सुनते है।(बुख़ारी–881, मुस्लिम–850)

'' जब जुमे का दिन आता है तो मस्जिद के हर दरवाजे़ पर फ़रिश्ते पहुंच जाते है जो आने वालों के नाम बारी–बारी लिखते हैं फिर जब इमाम मिम्बर पर बैठ जाता है तो अपने सहीफो को लपेट कर मस्जिद में आ जाते हैं और खुत्बा सुनते हैं।'' (बुख़ारी–929)

अगर हम यह चाहतें हैं कि जुमे के दिन फ़रिश्ते अपने सहीफ़ों में हमारा भी नाम लिखें तो हमें चाहिये कि इमाम के मिम्बर पर पहुंचने से पहले हम मस्जिद पहुंचे। तभी हमें कुर्बानी का भी सवाब मिलेगा।

तहयतुल मस्जिद का हुक्म

जुमे की नमाज़ के लिए मस्जिद में पहुंचने के बाद सबसे पहला काम तहयतुल मस्जिद की अदायगी है। चाहे वह खुत्बा शुरू होने से पहले मस्जिद में आए या इमाम के खुत्बा शुरू करने के बाद। इसलिए कि आप सल्ल. का फ़रमान है ''तुम में से कोई शख़्स जब जुमे के दिन उस वक़्त आए जब कि इमाम खुत्बा दे रहा हो तो वह दो रकअत नमाज़ अदा करे और उन्हें हल्का फुल्का पढ़े।'' (मुस्लिम–875)

एक आदमी जुमे के दिन उस वक़्त मस्जिद में घुसा। जब आप सल्ल. खुत्बा दे रहे थे। आप सल्ल. ने पूछा–क्या तुमने नमाज़ (तहयतुल मस्जिद) पढ़ी है? उस ने कहा–नहीं। तब आप सल्ल. ने फरमाया–''उठो! दो रकअत नमाज़ पढ़ो।'' (बुख़ारी–931)

खुत्बे के दौरान ख़ामोश रहें:–

''जब तुमने जुमे के दिन इमाम के खुत्बे के दौरान अपने साथ बैठे हुए शख़्स से यूं कहा कि ख़ामोश रहो तो तुमने लग़ू हरकत की।''(बुख़ारी–934, मुस्लिम–851)

''जिस शख़्स ने जुमे के दिन गुसल किया और खुत्बे के दौरान कोई लग़ू हरकत नहीं कि तो उसका यह जुमा अगले जुमे तक उसके गुनाहों का कफ्फारा होगा। जिस शख़्स ने बेहूदा हरकत की और लोगों की गर्दनों को फलांगा तो उसका यह जुमा नमाज़े ज़ुहर शुमार होगा।'' (अबुदाऊद–347–सही)

''जुमे की नमाज़ के लिए आने वाले लोग तीन तरह के होते हैं। एक वह शख़्स है जो जुमे की नमाज़ के लिए आता है और इस दौरान वह बेहूदा बात या काम करता है तो उसे सिर्फ़ बेहूदगी ही मिलती है। दूसरा वह शख़्स है जो जुमे के लिए आता है और उसका मक़सद सिर्फ़ दुआ करना होता है तो अल्लाह चाहे तो उसकी दुआ कुबूल करले और चाहे तो उसे रद्द कर दें। तीसरा वह आदमी है जो जुमे के लिए हाज़िर हो कर पुरसुकून रहता है। ख़ामोशी और तवज्जोह के साथ खुत्बा सुनता है। किसी की गर्दन को नहीं फलांगता और न ही किसी को तक्लीफ़ पहुंचाता है तो इसी शख़्स का जुमा आने वाले जुमे तक बल्कि और तीन दिन उसके लिए कफ्फ़ारा बनता है।'' (अबुदाऊद–1113–सही)

जुमे के दिन एक मुबारक घड़ी

''जुमे के दिन एक घड़ी ऐसी आती है कि उसमें कोई मुसलमान बन्दा नमाज़ पढ़ रहा हो और अल्लाह से दुआ मांगे तो अल्लाह उसकी वह दुआ कुबुल करता है। (बुख़ारी–935, मुस्लिम–852)

''वह (मुबारक घड़ी) इमाम के मिम्बर पर बैठने से नमाज़ ख़त्म होने के बीच

रहती है।''(मुस्लिम–853)

''तुम उसे अस्र की नमाज़ के बाद आख़िरी घड़ी में तलाश करो।'' (अबुदाऊद–1048–सही) इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी रह. ने फ़त्हुल बारी में इस बाबत उलैमा के 40 अक़वाल दर्ज किये हैं। लेकिन ज़्यादार उलैमा इन्हीं दो तरफ़ गये हैं। इमाम इब्ने क़य्यिम रह. ने इन्हीं दोनों अक़वाल को राजेह क़रार दिया है क्योंकि यह दोनों सही अहादीस पर मब्नी हैं। अलबत्ता दूसरे कौल (असर के बाद) को ज़्यादा राजेह क़रार दिया है। (जादुल मआद–जिल्द। सफ़ा–382)

नमाज़े जुमा के बाद नमाज़े सुन्नत

''जो शख़्स नमाज़े जुमा के बाद नमाज़ पढ़ना चाहे तो चार रकअत पढ़े। अगर तुम जल्दी में हो तो दो रकअत मस्जिद में और दो रकअत घर लौटकर पढ़ लो।'' (मुस्लिम–881) ''इब्ने उमर रज़ि. जुमे की नमाज़ पढ़कर घर चले जाते थे और घर पर दो रकअत पढ़ते थे और कहते थे आप सल्ल. भी ऐसा ही किया करते थे।'' (मुस्लिम–882)

1.जुमे के दिन को रोज़े के लिए और उसकी रात को क़याम के लिए ख़ास करना

हफ्ते भर के दिनों में सिर्फ़ जुमे के दिन को रोज़े के लिए और सिर्फ़ जुमे की रात को तहज्जुद के लिए ख़ास कर लेना सही नहीं है क्योंकि ऐसा करने से आप सल्ल. ने मना किया है।''बाक़ी रातो को छोड़कर सिर्फ़ जुमे की रात को क़याम के लिए ख़ास न करो। हां अगर कोई शख़्स रोज़ा रखने का आदी हो और वह जुमे के दिन आ जाए तो (कोई हरज नहीं)'' (मुस्लिम–1144)

'' तुम में से कोई शख़्स सिर्फ़ जुमे के दिन का रोज़ा न रखे। हां अगर उससे एक रोज़ पहले या उसके एक दिन बाद का भी रोज़ा रखे तो (कोई हरज नहीं) मुस्लिम–1144, बुखारी–1985)

2. सूरह कहफ की तिलावत

जिस शख़्स ने जुमे की रात सूरह कहफ़ की तिलावत की तो उसके सामने उसके और ख़ाना–ए–काबा के बीच दूरी के बराबर नूर आ जाता है।'' (सही अल जामेअ–लिलबानी–6471)

''जो शख़्स जुमे के दिन सूरह कहफ़ पढ़ता है तो उसके लिए अगले जुमे तक नूर ही नूर हो जाता है।'' (सही अली जामेअ–6470)

3. नबी सल्ल. पर क़सरत से दुरूद

इस दिन व रात में अल्लाह के रसूल सल्ल. पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद पढ़ना चाहिये। क्योंकि आप सल्ल. ने फ़रमाया ''तुम इस दिन मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ा करो। तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है।'' सहाबा किराम रज़ि. ने कहा हमारा दुरूद आप पर कैसे पेश किया जाएगा? जबकि (क़ब्र में आपका जस्दे अतहर) तो बोसीदा हो जाएगा। आप सल्ल. ने जवाब

दिया ''बेशक! अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अम्बिया के जिस्मों को खाना हराम कर दिया है।'' (अबुदाऊद–104–सही) ''मेरी उम्मत का दुरूद मुझ पर हर जुमे को पेश किया जाता है। पस जो शख़्स मुझ पर ज़्यादा दुरूद पढ़ेगा, वह सबसे ज़्यादा मेरे क़रीब होगा।'' (बैहक़ी–6089) ''जो मुझ पर एक दफ़ा दुरूद भेजता है, अल्लाह उस पर दस रहमतें नाज़िल करता हैं।'' (मुस्लिम–409) ''जो शख़्स मुझ पर एक दफ़ा दुरूद भेजता है तो अल्लाह उस पर दस रहमतें नाज़िल करता है, उसके दस गुनाह मिटा देता है और उसके दस दर्जात बुलन्द करता है।'' (सही अल जामेअ–6359)

''जो शख़्स सुबह के वक़्त दस दफ़ा और शाम के वक़्त दस दफ़ा मुझ पर दुरूद भेजता है, उसे क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअत नसीब होगी।'' (सही अल जामेअ–6357)

नमाज़े जुमा कैसे पाई जा सकती है?

नमाज़े जुमा को पाने के लिए ज़रूरी है कि नमाज़ी इमाम के साथ कम से कम आख़िरी रकअत पाले। अगर वह आख़िरी रकअत नहीं पाता या वह इमाम के साथ दूसरी रकअत के रूकूअ के बाद शरीक होता है तो उसे इमाम के सलाम फेरने के बाद खड़े होकर सिर्फ़ दो रकअत नहीं बल्कि जुहर की चार रकअत पढ़नी होगी इसलिए के आप सल्ल. ने फ़रमाया '' जो शख़्स नमाज़े जुमा की एक रकअत पाले, वह उसके साथ एक रकअत को और मिलाए। (इब्ने माजा–1121–सही)

''जो शख़्स नमाज़े जुमा या किसी और नमाज़ की एक रकअत पाले तो उसने नमाज़ (बा जमाअत) का सवाब पा लिया।'' (नसाई–557, इब्नेमाजा–1123–सही)

''जब तुम जुमे की एक रकअत को पालो तो उसके साथ एक रकअत को और मिला लेना और जब तुम से (दूसरी रकअत का) रूकूअ भी छुट जाए तो तुम चार रकआत पढ़ना।'' (इब्ने अबिशैबा, तबरानी, बैहक़ी–सही)

''जब तुम्हें जुमे की एक रकअत मिल जाए तो तुम उसके साथ एक और रकअत मिला लेना। जब तुम इमाम के साथ तशहुद में मिलो तो तुम चार रकआत पढ़ लेना।'' (बैहक़ी)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें जुमे के दिन की बरकात से फ़ायेदा हासिल करने की तौफ़ीक़ दे। हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए और हमें दुनिया व आख़िरत में कामयाबी नसीब फ़रमाए।

आमीन्

मा़खूज़
ज़ादुल ख़तीब
अज़–डा. मुहम्मद इसहाक ज़ाहिद

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
मो. 9214836639
9887239649